ज़रा सोचें...

अपनी महानता से व्यवहार करें, दूसरों को देखकर नहीं

अपने स्वमान में रह सम्मान देते चलें...

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

हमारे साथ यदि कोई बुरा व्यवहार करते हैं, उसी में ही अवस्था हलचल में आती है ना! कई कहते हैं कि मैंने इतना अच्छा व्यवहार किया, फिर भी उसने मेरे साथ क्या किया! क्योंकि आपके पास उनका कोई जमा नहीं है। इसलिए उनका हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं है। तो आजकल आप देखिये दुनिया में, हर साधन है, सुविधायें हैं, सब चीज़ें क्वालिटी बन गई। आज से 100-150 वर्ष पूर्व तो कुछ भी नहीं था। लोग कितनी मेहनत से जीते थे। आज कितने साधन-सुविधाएं हो गए हैं, परंतु फिर भी सुख-शांति गायब है। अगर इस पर सोचें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि मनुष्य के दुःख का कारण मनुष्य ही है। आज हमारे आपसी स्वभाव-संस्कार ऐसे हैं, जोकि अभी भी दुःखी होते रहते हैं। चीज़ें अच्छी हो गईं, पर मनुष्य का मनुष्य से व्यवहार अच्छा नहीं रहा। तो हम दूसरों के मालिक तो नहीं बन सकते हैं ना कि भाई, आप ऐसा नहीं बोलो। उनकी अपनी आदत है, संस्कार है तो वो तो बोलेंगे ही। कहते हैं ना कि दूसरों के मुँह पर तो ताला नहीं लगा सकते। बाबा ने हमें ही ज्ञानी बना दिया, सेंसिबल बना दिया। तो हमारे मन, वचन, कर्म अच्छे बन गये। उसने बोला ना... पर मुझे नहीं बोलना है। बाबा कहते हैं, तुम्हारे मुख से क्या निकलना चाहिए, रत्न निकलने चाहिए, पत्थर नहीं। ऐसे-वैसे कड़वे शब्द नहीं, निंदा-ग्लानि नहीं। ये चीज़ें दुःख देने वाली हैं ना! जिस मुख से बाबा का ज्ञान देते हैं, उस मुख से कड़वे शब्द बोल सकते हैं! नहीं ना! हम भी तो बाबा के बच्चे, बाबा की तरफ से सेवा करने के लिए निमित्त हैं तो हमारे मुख से ऐसी बातें क्यों निकले! रोज़ बाबा के महावाक्य सुनते हैं कानों से, तो तेरी-मेरी कर सकते हैं! क्यों किसी की ग्लानि की बातें सुनें! किसी के बच्चों की ग्लानि करके आप उनके माँ-बाप को खुश कर सकते हैं? नहीं। तो हम क्यों ग्लानि करें! आपस में एक-दो की ग्लानि क्यों करें! जबकि पता है ना, बाबा ने कहा है कि नंबरवार हैं, तो नंबरवार का मतलब है कि कोई न कोई कमी तो रहेगी ना। तो वो बातें

व्यवहार में हल्की वृत्ति, प्रवृत्ति के कारण ही दुःख ने हमें घेर रखा है। आज मनुष्य ही मनुष्य को दुःख दे रहा है। उनमें आई विकृतियों से संबंध में टकराव व अशान्ति का कारण बनता है। ये समझ लेना ही सबसे बड़ी समझदारी है!!!

हम क्यों करें, वो चर्चा हम क्यों करें! तो हमें इन हल्की वृत्ति-प्रवृत्ति से ऊपर उठ जाना है।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी एक किताब में लिखा है कि परचिंतन, तेरा-मेरा, निंदा-ग्लानि, ईर्ष्या, ये दासों के संस्कार हैं, राजा के नहीं। हम तो कौन हैं? बाबा कहते हैं ना कि मैं कौन-सा योग सिखाता हूँ? राजयोग। राजऋषि। मैं तो राजा बनाता हूँ, बाकी तुम अपने आप, अपने पुरुषार्थ और सेवा अनुसार अपना पद तय करते हो। तो जितना ज्ञान-स्वरूप होकर आप चलेंगे, उतने हलचल से मुक्त हो जायेंगे। नहीं तो कदम-कदम पर कुछ-न-कुछ होता है और अवस्था बिगड़ती रहती है। किया-कराया पुरुषार्थ ज़ीरो हो जाता है। अगर कोई चीज़ आप बनाओ, फिर बिगाड़ दो, फिर बनाओ, फिर बिगाड़ दो, तो इसको क्या कहेंगे? वेस्ट ऑफ टाइम, मनी, एनर्जी। नंबरवार तो अंत तक रहेंगे। सम्पूर्ण बन जायेंगे, फिर तो चलेंगे घर। तो कब तक अवस्था बिगाड़ते रहेंगे! इसलिए मुझे खुद निर्णय कर लेना है। मुझे खुद लक्ष्य बना लेना है। कोई भी व्यक्ति के कारण से, उनके बोल से, उनके व्यवहार से, उनके ईर्ष्या-द्वेष से मुझे डिस्टर्ब नहीं होना है। मुझे अपनी सेवा और अपने पुरुषार्थ में लगे रहना है।

बाबा कहते, मैं इतने अच्छे-अच्छे टाइटल तुम बच्चों को देता हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान, हीरो एक्टर, विश्व सेवाधारी, भगवान के बच्चे, शिव शक्ति, कितने ऊँचे-ऊँचे टाइटल बाबा देते हैं। ये हमारे ही है ना! माना कि हम ऐसे हैं। भगवान हमें जो कह रहा है क्या उस पर निश्चय नहीं है! बाबा कहते हैं, तो उसका नशा चढ़ना चाहिए ना!

कोई रॉन्ग टाइटल देगा कि बुद्धू है, कुछ आता नहीं है, तो फीलिंग आ जाती है! अब बताओ, कौन-सी बातें मन पर लगानी चाहिए? जो बाबा हमें इतनी ऊँची नज़र से देखता है, वो नशा और खुशी रहे ना! किसी ने कोई ऐसा-वैसा टाइटल दे दिया तो फीलिंग में क्यों आना है! मतलब हमने स्वीकार कर लिया ना! फीलिंग में आना माना मैंने स्वीकार कर लिया। तो ये बहुत ज़रूरी है कि हम ज्ञान-स्वरूप बनकर चलें। हम बाबा का ज्ञान सुनते हैं, पर सारा दिन फिर यूज़ करना है। इतना तो कोई नहीं समझायेगा। कितना बाबा ने हमें समझाया है! अच्छी ज्ञान की स्टडी चाहिए। मुरली का अध्ययन चाहिए। अध्ययन माना पूरी एकाग्रता से सुनना, समझना, लिखना, सार निकालना, रिवाइज़ करना, तो इसे पूरा अध्ययन कहा जाता है। और इसे अभ्यास में लाना।

जयपुर-सोडाला(राज.)। कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेह दीदी। साथ हैं ब्र.कु. राखी बहन।

गुवाहाटी-मालीगांव(असम)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के सिल्वर जुबली कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए अंशुल गुप्ता,जनरल मैनेजर,एन.एफ. रेलवे एवं उनकी धर्मपत्नी, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी,डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज़,नॉर्थ ईस्ट सबज़ोन एवं बांग्लादेश, ब्र.कु. शारदा दीदी,नेशनल कोऑर्डिनेटर,वुमेन विंग, ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. मेधावती बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित स्वर्णिम भारत के लिए आध्यात्मिकता की ओर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे पूर्व विधायक हरिओम यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.गीतांजलि दीदी। साथ में जैनुलाब्दीन एवं ब्र.कु.शशि दीदी।

अररिया-बिहार। नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए गौतम साह मोहिनी देवी मेमोरियल स्कूल एडिशनल डायरेक्टर निशीकांत दास, मोहिनी देवी मेमोरियल स्कूल प्रिंसिपल रंजन मिश्रा, बैंक कर्मी संजय गुप्ता, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा अन्य।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नर्मदा तट चिंनकी उमरिया में नर्मदा जयंती के अवसर पर लगने वाले विशाल मेले के दौरान आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाकर जन-जन को ईश्वरीय संदेश दिया गया। इस मौके पर ब्र.कु. वर्षा बहन, ब्र.कु. नेहा बहन, ब्र.कु. पलक बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

भुसावर-भरतपुर(राज.)। नवनिर्मित सड़क का लोकार्पण करने पर नदवई विधायक जोगिंदर सिंह अबाना,देव नारायण बोर्ड अध्यक्ष राज. सरकार को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. संस्कृति बहन।

जुरहेर-भरतपुर(राज.)। ब्रह्मा बाबा के 54वें पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रधानाचार्य बुधराम शर्मा, डॉ. गिर्राज बघेल, ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. संतोष बहन तथा अन्य।

पुणे-दिघी(महा.)। गणतंत्र दिवस के अवसर पर सेवाकेन्द्र में ध्वजारोहण के पश्चात् आर्मी के मेजर सुबेदार नवनाथ पवार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन। इस मौके पर अन्य भाई-बहनों सहित रामचंद्र गायकवाड़ विद्यालय के 411 छात्र-छात्राओं ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। शेखपुरा जिले के जिला पदाधिकारी डीएम सावन कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पिंकी बहन।